Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com
कृषि कुंभ
E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 12, (मई, 2026)
पृष्ठ संख्या 24–25

धान में लगने वाले प्रमुख कीट, रोग एवं उनकी रोकथाम

आकाश वर्मा, नवीन विक्रम सिंह एवं राहुल कुमार,
कीट विज्ञान विभाग, कृषि संकाय
कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान,
सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: – aakash872003@gmail.com

परिचय–

धान भारत और दुनिया के एक बड़े हिस्से का प्रमुख खाद्य फसल है, जिससे चावल प्राप्त होता है, भारत चावल उत्पादन 150 मिलियन टन 150.18 मिलियन टन से अधिक हो गया है, भारत में 145.28 मिलियन टन के साथ चीन को पीछे छोड़ते हुए पहले स्थान पर आ गया है , भारत में लगभग 52 मिलियन हेक्टर क्षेत्र में धान की खेती की जाती है। जो विश्व में सबसे अधिक भारत के पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, पंजाब, धान का प्रमुख उत्पादक राज्य है, चीन में धान उत्पादन हेक्टर उत्पादकता के मामले में बढ़त बना चुका है, चीन की उत्पादकता 7.5 मेट्रिक टन प्रति हेक्टर है जो भारत की 4.3 मैट्रिक टन प्रति हेक्टेयर है धान की प्रमुख कीट एवं रोग जो निम्नलिखित हैं।

प्रमुख कीटः

1. तना छेदकः धान में तना छेदक एक महत्वपूर्ण कीट है, जो पौधे के तने के अंदर जाकर खाता है, जिससे पौधे कमजोर हो जाती है, और धान में डेड हार्ट और व्हाइट ईयर जैसे लक्षण दिखाई देते हैं।

रोकथाम :

- क्लोरांट्रेलीप्रोल 0.4 प्रतिशत में 4–5 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रयोग करें।
- Cartap हाइड्रोक्लोराइड 4 में 7.5–10 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से 250 – 300 पानी में मिलाकर प्रयोग करें।
- फिप्रोनिल 0.3 प्रतिशत में 6–8 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से 150 लीटर पानी में मिलाकर प्रयोग करें।
- क्लोरांट्रानिलीप्रोल 0.5 प्रतिशत में 2.5 – 3 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

2. पत्ती लपेटकः धान में पत्ती लपेटक एक प्रमुख हानिकारक कीट है जो फसल को काफी नुकसान पहुंचाता है, या इल्ली पत्तियों के किनारे मोड़कर या लपेटकर उसके अंदर छिपकर हरी पत्ती के ऊतकों को खुरचकर खाती है, जिससे पत्तियां सफेद होकर सूख जाती है।

रोकथामः

- क्लोरांट्रनिलीप्रोल 18.5% S C में 150 लीटर पानी में 60 मिली कोराजन मिलाकर स्प्रे करें।
- टोफेनपायर्ड 15% एवं ठपमिदजीतपद 7.5% SE में 400 मिली प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।
- साइपरमैथलीन में 200 प्रति लीटर पानी में मिलकर शाम के समय छिड़काव करना चाहिए।

3. भूरा फुदकाः धान में भूरा फुदका एक अत्यंत हानिकारक कीट है, जो धान के तने के निचले हिस्से में छिपकर रस चूसता है, और फसल को सूखा देता है।

रोकथामः

- ट्रिफ्लूमेंजोपुरीरिम 10% SC में भूरा फुदका एक बहुत ही आधुनिक और असरदार दवा है।
- फ्लोनिकेमिड 50%WG में फुदका को नियंत्रित करने के लिए एक बेहतरीन कीटनाशक है

- क्पदवजमनितंद 20% SG में कपदंजवनितंद भी फुदका को तेजी से खत्म कर देता है।
- थामेंथोक्सम 25% WG में 100 ग्राम प्रति एकड़ किधर से 250 लीटर पानी में मिक्स करके घोल बनाकर छिड़काव करें।

4. गंधी बग: धान में गंधी बग एक अत्यंत विनाशकारी कीट है, जो बालियों के दूधिया अवस्था में दानों से रस चूस कर उन्हें खोखला व भूरा बना देती है, जिससे पैदावार में कमी आ जाती है और भारी नुकसान भी होता है।

रोकथाम:

- Imidacloprid 17.8% SL मैं एक मिलीलीटर को 1 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।
- पिपरौनिल 5% SC में गंधी बग के प्रभावी है।
- डमजीलस parathion 5% डस्ट के साथ 20 – 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से सुबह के समय छिड़काव करें।
- मैलाथियान 5 % MLV मैं इसका प्रयोग किया जा सकता है।

प्रमुख रोग:

1. ब्लास्ट रोग: धान में ब्लास्ट रोग जिसे झोंका रोग कहा जाता है, पाइरिकुलरिया ओराइजा नामक फफूंद से होने वाले सबसे हानिकारक रोग है।

रोकथाम:

- ट्राइसाइक्लाजोल 75% WP में 120 से 150 ग्राम का प्रयोग करें।
- एग्जिस्ट्रोबिन 18.2% एवं डिफेनोकनाजोल 11. 4 % में 200 ml का प्रयोग करें।
- कार्बेंडाजिम 12% एवं उनको जब 63% WP में 300 – 400 ग्राम 2500 – 300 लीटर पानी में मिलाकर का प्रयोग करें।

2. जीवाणु झुलसा रोग: धान में जीवाणु झुलसा रोग एक बहुत ही गंभीर रोग है, जो जंयोमोनास ओराइजी नामक बैक्टीरिया के कारण होता है।

रोकथाम:

- Straptocycline में 15–20 ग्राम प्रति हेक्टेयर 300 लीटर पानी में मिलाकर का प्रयोग करें।
- कॉपर ऑक्सिक्लोराइड 50% WP में 500 –750 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर 250 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।
- कॉपर हाइड्रोक्साइड 53.8% DF में 600 – 800 ग्राम प्रति हेक्टेयर 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रयोग करें।

3. भूरा धब्बा रोग: धान में भूरा धब्बा रोग एक गंभीर कवक जनित रोग है, जो पत्तियों पर गोल–अंडाकार भूरे रंग के धब्बे बनाती है, जिससे पैदावार में 25 – 35 प्रतिशत की कमी आ जाती है।

रोकथाम:

- प्रापिकनाजोल 25% EC सबसे प्रभावित दवा में से एक है इसकी 200 मिली मात्रा को प्रति एकड़ की दर से 150 – 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- हेक्साकोनाजोल 5% SC एकड़ में 400 – 500 मिली लीटर का 200 लीटर पानी में घोल बनाकर स्प्रे करें।
- मैंकोजेब 75% WP में 500 – 600 ग्राम प्रति एकड़ 2 – 2.5 प्रति लीटर पानी में उपयोग करें।
- कार्बेंडाजिम में 1.0 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर लगभग 400 ग्राम प्रति एकड़ की दर से 100 – 150 लीटर पानी में मिलाकर उपयोग करें।

4. हल्दी रोग: धान में हल्दी रोग, जिसे आभासी कडुआ भी कहते है, जो फंगस से फैलने वाली एक बीमारी रोग है जिससे बाली निकलते समय दाने पीले – नारंगी पाउडर में बदलकर दोनों को खराब कर देता है।

रोकथाम:

- प्रापिकनाजोल 25% EC 200 – 300 मिली मात्रा 200 लीटर पानी में उपयोग करें।
- ट्राइफ्लॉसिस्ट्रोबिन 100 – 120 ग्राम मात्रा 150 लीटर पानी में प्रयोग करें।
- कॉपर ऑक्सिक्लोराइड 50% WP 500 ग्राम प्रति एकड़ के साथ 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रयोग करें।